सभी के दिल का एक प्रारूप, हमारा परमात्मा 'ज्योति स्वरूप'

परमात्मा के स्वरूप को लेकर सभी एकमत ही रहे हैं। लेकिन उसके स्वरूप को बताने का तरीका सबका अलग-अलग रहा। जितनी भी महान आत्माएँ, पीर, पैगम्बरों ने परमात्मा के स्वरूप को बताया, उसमें कहीं न कहीं निराकार का भाव अवश्य छुपा हुआ था। इसमें मुख्य बात हमें ये समझनी है कि परमात्मा कोई देहधारी मनुष्य हो नहीं सकता, वो होगा तो देहातीत ही। उसके स्वरूप का वर्णन प्रमुख पैगम्बरों ने जो किया, वो निम्नवत है...

ईसा के भाव में 'दिव्य ज्योति रूप'

जैसे कि ईसा मसीह(जिसस क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा कि 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। जिसस ने कभी ये नहीं कहा कि 'आई एम गॉड', उसने परमात्मा को लाइट के स्वरूप में ही बताया।

ज्योति 'जेहोवा' का हुआ साक्षात्कार

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहाँ पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

सिक्ख धर्म ने माना निराकार को

इसी प्रकार सिक्खों के धर्म स्थापक गुरू नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है। जबकि ज्योति स्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मंदिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरू गोविंद सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं, बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

'होली फायर' में भी निराकार

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहाँ पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है, तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहाँ स्थापित करते हैं।

रहस्य गिरजाघर का

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

श्रीकृष्ण के भी पूज्य निराकार शिव

इसी तरह महाभारत के युद्ध के पहले विजय हेतु कुरूक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की, तथा साथ-साथ श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई व युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

'संग-ए-असवद्' के रूप में माना

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे 'संग-ए-असवद्' कहते हैं। परंतु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है। उसको वे लोग 'नूर-ए-इलाही' भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन भी निराकार का समर्थक

जापान में शिवोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊँचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' भी कहते हैं। उसका नाम दिया है 'चिंकोनसेकी' जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

श्रीराम ने भी पूजा 'शिव' को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता होती? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा शिव का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

परमात्मा द्वारा परिवर्तन का प्रमाण यहाँ

मानवता व दिव्यता का प्रत्यक्ष रूप

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादीजी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। - **एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मनंद जी महाराज, अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।**

परम शांति का केन्द्र है आबू

दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पायी गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरूष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, इसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारीज़। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। -**श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरू चन्ना सिद्धाराम।**

अल्लाह,खुदा,गॉड का रूप निराकार ज्योति है

अल्लाह, खुदा, गॉड व भगवान वास्तव में एक ही है। वह निराकार ज्योति है। पवित्र कुरान में एक लाख पैगम्बरों का वर्णन है, जिन्होंने समय-समय पर इस धरा पर अवतरित होकर मानव जाति को यह शिक्षा दी है कि परमात्मा एक है और वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही सरल ढंग से पूरे विश्व को यह शिक्षा दे रही है कि कैसे परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ें तथा उसकी इबादत करें। जिससे मन को शांति व सुकून की अनुभूति हो। - **शाहबाज़ खान, प्रसिद्ध फिल्म कलाकार,मुम्बई ।**

प्रेम का अद्भुत अनुभव

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारा लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं परमात्मा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड, सीनियर साइंटिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर,नई दिल्ली ।**